प्रतिभा

2023-2024

हिन्दी साहित्य सभा

संत अलॉयसियस स्वशासी
महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

साहित्य सभा कार्यकारिणी

2023-2024

अनुष्का मिश्रा (अध्यक्ष)

मानशी राय (उपाध्यक्ष)

निखिल शर्मा (सचिव)

कौतुकी उपा
(सह सचि

अंजली रघुवंशी
(कोषाध्यक्ष)

रागिनी नापित
(कार्यकारिणी सदस्य)

श्रेया पटेल
(कार्यकारिणी सदस्य)

मंयक द्विवे
(कार्यकारिणी

प्रियंका
(कार्यकारिणी सदस्य)

लक्ष्मी
(कार्यकारिणी सदस्य)

चंचल गौतम
(छात्र संपादक)

स्वेच्छा द्विवे
(छात्र संपाद

हिन्दी साहित्य सभा
प्रतिभा

अंक – 2023–2024

संरक्षक
डॉ. जे.बेन एंटोन रोस
प्राचार्य

संपादक
डॉ. रामेन्द्र प्रसाद ओझा
प्रभारी आचार्य

सहायक संपादक
डॉ. रीना थॉमस

छात्र संपादक
चंचल गौतम
स्वेच्छा द्विवेदी

अनुक्रमणिका रचनाएँ

संपादकीय – चंचल गौतम

पुस्तकालय का महात्व – मयंक प्रकाश द्विवेदी

मैं एक शिक्षक हूँ – मानशी राय

ईश्वर का दूसरा रूप जनक जननी – अरूण नाहर

इच्छाओं का घर – अनुष्का नाहर

संगति का असर – शिवांशु अहिरवार

स्वामी विवेकानंदःयुवाओं के आदर्श – वैष्ठवी मोगरे

पेड़ लगाओं प्रकृति बचाओं – वंशिका बैरागी

समय का महत्व – आयुषी झा

हिन्दू है हम – धर्म निहारिका जाटव

पर्यावरण – साक्षी बावरिया

नया सबेरा – लक्ष्मी

बचपन के वो दिन – प्रियंका

धर्म एकता का माध्यम है – रोहित कुमार प्रियदर्शी

आत्मविश्वास – ईशा जायसवाल

जाति व्यवस्था – विक्रांत सिंह धुर्वे

चंद्रयान –3 – आलिया फातिमा सिद्दकी

बड़े चलो – विशाल सिंह धुर्वे

कृष्ण कन्हैया – आर्या अग्रवाल

भगवान विष्णु ने क्यों लिया राम अवतार –आर्यन दाहिया

हमारे प्यारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी – एकता अम्लानी

संपादकीय

सृजनशीलता प्रकृति का अनुपम उपहार है। सारी सृष्टि में केवल मानव ही है जो विभिन्न विषयों पर विचार करता है और अपनी संवेदनाएं दूसरों के प्रति रखता है। साहित्य में ही वह गुण है जिसके द्वारा हम अपनी संवेदना को सुंदर अभिव्यक्ति दे सकते हैं। प्रतिभा पत्रिका विगत कई वर्षों से लगातार यह प्रयास कर रही है कि हम विद्यार्थी अपनी प्रतिभा को, अपने विचारों को, अपनी संवेदनशीलता को सुंदर रचनाओं के माध्यम से प्रकट करें। यह एक ऐसा मंच है जो विद्यार्थियों की सृजनशीलता को नए आयाम प्रदान करता है। उन्हें प्रेरित करता है कि वह समाज से जुड़े रहे और कुछ ऐसा लिखे जो समाज के लिए उपयोगी हो। जो जनकल्याण करता , जो सारी सृष्टि के लिए एक प्रेरक हो। इसी उद्देश्य के साथ प्रतिभा पत्रिका का यह अंक उन सभी नव लेखकों को समर्पित है जो अपनी कलम के द्वारा एक नया इतिहास लिखने में सक्षम है।

चंचल गौतम

पुस्तकालय का महत्व

मयंक प्रकाश द्विवेदी
बी.ए.चतुर्थ सेमेस्टर

पुस्तकें हमारी उत्कृष्ट पथ प्रदर्शक हैं। हम अकेले में इनसे बातें कर सकते हैं तथा समय का सदुपयोग कर सकते हैं। महान् आत्माओं के दर्शन भी कर सकते हैं। जिज्ञासा, कौतूहल, नित नवीन ज्ञान की प्राप्ति ये मानव स्वभाव के अंग है एवं उसकी मूल प्रवृत्ति हैं और पुस्तकें सर्वश्रेष्ठ साधन हैं। छात्र अपनी पाठ्य पुस्तकों के माध्यम से अपनी सभी जिज्ञासाओं को पूरा नहीं कर पाते। अतः वे अन्य पुस्तकों को भी पढ़ना चाहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति इतना सम्पन्न नहीं होता कि सभी किताबें खरीद सके। अतः इसी कारण पुस्तकालय का प्रचलन हुआ।

पुस्तकालय दो शब्दों से मिलकर बना है- पुस्तक + आलय अर्थात वह स्थान या भवन जहाँ पुस्तकों का संग्रह होता है। पुस्तकों का घर ही पुस्तकालय है। पुस्तकालय में अनेक विधाओं एवं विषयों की किताबें रहती हैं। साहित्य, धर्म, राजनीति, इतिहास, विज्ञान आदि की पुस्तकें और साहित्यकोष, ज्ञानकोष, शब्दकोष रहते हैं।

शारीरिक स्वास्थ्य के लिए जिस प्रकार मनुष्य को पौष्टिक भोजन की जरूरत होती है। उसी प्रकार नवीन ज्ञान की प्राप्ति के लिए नई पुस्तकें अपेक्षित हैं। ये सब हमारे मानसिक स्वास्थ्य के लिए जरूरी है। अपने मस्तिष्क को सक्रिय रखने के लिए उसे शुद्ध ज्ञान की खुराक देते रहना चाहिए। इस ज्ञान की उपासना के दो स्थान है। पुस्तकालय में हम ज्ञान के व्यापक क्षेत्र का रसास्वादन सकते हैं। यहाँ सभी की रुचि के एवं सभी प्रकार के ग्रंथ सरलता से मिल जाते है। यहाँ के शान्त वातावरण में हम अपने जीवन की अशान्ति और संघर्ष से छुटकारा पा सकते हैं। प्रायः पुस्तकालयों के साथ वाचनालय भी होते हैं। जहाँ प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने पसंद की पुस्तक निकालकर पढ़ सकते हैं।

पुस्तकालय के अनेक प्रकार होते हैं। हमारी शाला, महाविद्यालय या विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों में छात्रों की रुचि की, उनको प्रेरणा देने वाली तथा उनके अध्ययन विषयों में सहायता कर उनके ज्ञान की परिपक्व बनाने में सहायक पुस्तकें होती हैं। इनका कार्य क्षेत्र सीमित होता है, केवल छात्र और अध्यापक ही इसका लाभ उठा सकते हैं; इन पुस्तकालयों का

महत्व सर्वोपरि है क्योंकि ये छात्रों की ज्ञान वृद्धि में सहायक होते हैं। वे छात्र जो पुस्तकें खरीदने की क्षमता नहीं रखते या वे जो ज्ञान के भण्डार को और बढ़ाना चाहते हैं एवं एक विषय के लिए अनेक पुस्तकों से अध्ययन करते हैं, उनके लिए ये संस्थागत पुस्तकालय अमूल्य सेवा देकर छात्रों को शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने का अवसर देते हैं।

दूसरे प्रकार के पुस्तकालय वे होते हैं जो व्यक्तिगत कहलाते हैं। अनेक विद्वान जो धन की दृष्टि से सक्षम होते हैं वे भी चुन-चुनकर अनेक विषयों की एवं अनेक प्रकार की पुस्तकें स्वयं खरीद कर उनका यादगार पुस्तकालय बनाते हैं। इनमें प्राचीन और सभी प्रकार की पुस्तकें होती है। उनके निकटतम मित्र या संबंधी इसका लाभ उठा सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति जिसे नए ज्ञान के प्रति कौतूहल हो वह अपनी रुचि एवं अपनी क्षमता के अनुसार छोटा या बड़ा पुस्तकालय अपने घर पर अपनी अलमारी में बना सकते हैं। विद्या प्रेमी व्यक्तियों की यही सम्पदा है।

कई शासकीय पुस्तकालय भी होते हैं जो भव्य एवं विशाल भवनों में स्थित होते हैं। यहाँ धन की कमी न होने से बड़े दुर्लभ ग्रंथों का रखरखाव प्रशिक्षित एवं विद्वान पुस्तकालाध्यक्षों की देख-रेख में होता है। इन पुस्तकालयों की व्यवस्था सरकार करती है और यहाँ की व्यवस्था बनाए रखने के लिए अनेक कर्मचारी तैनात रहते हैं, पर ये पुस्तकालय जन साधारण की पहुँच से बाहर होते हैं। इनमें प्रवेश के और पुस्तक प्राप्त करने के कठिन नियमों के कारण ये केवल विशेष वर्ग के उपयोग में सीमित रहते हैं।

यथार्थ में पुस्तकें मनुष्य की पथ प्रदर्शक और सच्ची साथी है। अतः गाँव-गाँव में पुस्तकालयों की स्थापना जरूरी है। इससे ग्रामवासियों में पढ़ने के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न होगी। उनका ज्ञान बढ़ेगा और इस प्रकार देश में योग्य एवं सक्षम लोगों की अधिकता स्वयमेव होगी जो देश के सुखद भविष्य की द्योतक होगी।

.....

मैं एक शिक्षक हूँ

मानशी राय
बी.ए.चतुर्थ सेमेस्टर

तुम नन्हे से, पहली दफा, जब मुझसे मिलने आए थे
तुम्हारी जिज्ञासाओं को अंगीकार किया था मैंने,
विविध विषयों से मिलाया तुमको
उस पर तुम्हारे अल्पज्ञान को भी स्वीकार किया था मैंने।
भांति-भांति की मिथ्या कल्पनाएँ थी तुम्हारी
मन के अंधकार को दूर किया था मैंने
तुम यूं ना पूजो मुझे, न मुझे ईश बनाओ
नहीं कोई चमत्कार किया मैंने
मैं अज्ञानता का भक्षक हूँ। मैं तो बस के एक शिक्षक हूँ।।
तुम्हारी किसी शरारत या गलती पर, मैने बेत कभी मारी होगी,
कभी कटु शब्दों से मैंने तुमको, खूब फटकार लगाई होगी,
घाव खूब दिए होंगे तन मन पर नींद तुमको उस रोज न आई होगी
मन ही मुझको शत्रु होगा तुमने माना
सोचो उस रोज मेरी छड़ी भी रोई होगी परंतु
मैं शुभकामनाओं का प्रेषक हूं मैं केवल एक शिक्षक हूं ।।
तुम्हे पढ़ाने को मैंने किया रतजगा कभी,

कभी दिन को मैंने शाम किया

तुम बने चिकित्सक, अभियांत्रिक, की वकालत

मैंने सबका काम किया

जब तुम अपनी सफलता की खुशी लाए

मैंने केवल उस पल अपनी जिम्मेदारियों से आराम लिया,

मैंने तो अपना पूरा जीवन केवल तुम्हारे

और शिक्षा के ही नाम किया तु

म्हारे स्वर्णिम भविष्य का रक्षक हूँ। हाँ, मैं ही एक शिक्षक हूँ।

चाह नहीं है यह मेरी कि तुम मुझको हर बार नमस्कार करो,

भूख यह भी नहीं है कि शिक्षक दिवस के दिन

तुम मेरा उपहारों से सत्कार करो

मैं नहीं कहता कि तुम आजीवन

मुझसे मिश्री सा मीठा व्यवहार करो,

परंतु नहीं है यह भी कहना मेरा कि मेरे ज्ञान का तुम तिरस्कार करो,

केवल सुखद परिणामो का भिक्षुक हूँ। हाँ, हाँ, मैं ही एक शिक्षक हूँ।

ईश्वर का दूसरा रूप : जनक-जननी

तरुण नाहर
बीए द्वितीय सेमेस्टर

"सर्दी की वो धूप के जैसे, गर्मी की वो शाम है पहली फुहारों के जैसे हैं, है पूर्णिमा के चांद से"

जिन्होंने हमें जन्म दिया है, उनके बारे में शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता, वो हमारे लिए ईश्वर से कम नहीं है, अर्थात् हर स्थान पर ईश्वर, मौजूद तो नहीं हो सकते ना इसीलिए तो उन्होंने माता-पिता को बनाया।जन्म के बाद हमारी परवरिश करने में भी माता-पिता हर वो संभव प्रयास करते है जिससे संतान सक्षम बने। हमेशा माता-पिता खुद से पहले अपनी संतान के बारे में सोचते हैं। माता-पिता खुद भूखे सो सकते हैं परन्तु कभी अपनी संतान को भूखे सोने नहीं देते हैं। माता-पिता हमें वह प्रेम प्रदान करते हैं जो और कोई और नहीं कर सकता।

इस संसार में शायद ही कोई मिलेगा जो हमें माता-पिता की तरह निस्वार्थ भाव से प्रेम करें...!जनक/पिता उस दीये की तरह हैं, जो खुद, जलकर, अपनी संतान का जीवन रौशन करते हैं।कई लोग मां के ऊपर लिखते है परन्तु पिता के बारे में बहुत कम लोग ज़िक्र करते है "मां अगर पैरों पे चलना सिखाती है, तो पैरों पर खड़े होना हमें पिता सिम सिखाते हैं।पिता हमसे बहुत प्रेम करते हैं मगर कई बार जताते नहीं है । पिता का अनुभव, अनुशासन, डांट-फटकार हमे मजबूत और कर्मठ बनाती हैं, जो कि जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।पिता हमेशा अपनी संतान को हार न मानने और आगे बढ़ने की सीख देते देते हैं। अगर हम माने तो हमें पिता से अच्छा प्रेरणा स्रोत कोई नहीं मिल सकता जो कि प्रतिदिन अपने परिवार के लिए संघर्ष करते हैं।

जननी/ माता/माँ -- इस संसार में सबसे प्रेमपूर्ण, पवित्र अटूट रिश्ता माँ और संतान के मध्य का माना जाता है संतान को नौ महीने कोख में रखने के पश्चात् उसे जन्म देने का कष्ट भी माताएं हँसते-हँसते सह जाती है फिर उन्हें ऊंगली पकड़के चलना सिखाती है, उन्हें अच्छे व बुरे का ज्ञान कराती हैं..!

माताएं जीवन भर अपने बच्चों की भलाई, वृद्धि, विकास और कल्याण के लिए हमेशा त्याग करती है और अपने बच्चों को प्राथमिकता देती है, माँ न केवल बच्चे को जन्म देती है बल्कि उसे प्यार करने, देखभाल करने और बिना किसी शर्त खुद का आजीवन समर्पण करने को तैयार रहती है।माताएं बच्चों के जीवन की प्रथम गुरुवर मित्र होती है । मां भले ही अनपढ़ हो परंतु अपने बच्चों को जरूर बढ़ाती व अच्छी सीख देती है। हमारे लिए हमारी माँ सभी मूल्यवान संपत्ति से अधिक मूल्यवान है। माँ अपने बच्चों की खुशी में भावुक में हो जाती है। मां का स्थान हमारे जीवन में सर्वोपरि है।

"हमारी किस्मत में एक भी गम न होता,
अगर हमारी किस्मत लिखने का हक़ माता-पिता को होता।"

इच्छाओं का घर

अनुष्का मिश्रा
बी.ए. तृतीय वर्ष

इच्छाओं का घर कहाँ है?

क्या है मेरा

मन या मस्तिष्क या फिर

मेरी सुप्त चेतना? इच्छाएं है

भरपूर, जोरदार और कुछ मजबूर

'पर किसने दी है ये इच्छाएं ?

क्या पिछले जनमों से चल कर आयी

या शायद फिर प्रभु ने ही है मन में समाई ?

पर क्यो है और क्या है ये

इच्छाएं ? क्या इच्छाएं मार डालूँ ?

या फिर उन पर काबू पा लूं

और यदि हाँ तो भी क्यो ?

जब प्रभु की कृपा से है मन मे समाई?

तो फिर क्या है उनमें बुराई ?

संगति का असर

शिवांशु अहिरवार
बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर

राम और श्याम दो भाई थे, दोनों एक ही कक्षा में पढ़ा करते थे। राम पढ़ने में बहुत होशियार था। पर उसका भाई पढ़ने से दूर भागता था। राम के दोस्त पढ़ने में अव्वल थे और वहीं दूसरी तरफ श्याम के दोस्त को पढ़ने में बिल्कुल दिलचस्पी नहीं थी वह पढ़ाई से दूर भागते थे। में अवल था राम के थे और वही दूसरी तरफ स्याम के दोस्त को पढ़ने में बिलकुल दिलचस्पी नहीं थी। यह सब देखने के बाद राम अपने भाई श्याम को उसके दोस्तों से दूर रहने के लिए बोला था, लेकिन श्याम अपने भाई की बात नहीं सुनता और उसे कहता की आप आपने काम से मतलब रखो।

एक दिन श्याम अपने भाई के साथ स्कूल जा रहा था। उसका भाई राम कक्षा में चला गया अचानक श्याम के दोस्त आए और उसे कहने लगे कि आज हमारे दोस्त हरि का जन्मदिन है इसलिए आज स्कूल ना जाओ। पहले तो श्याम ने मना किया किंतु दोस्तो के बार-बार बोलने पर वह उनके साथ चला गया। धीरे-धीरे श्याम को इसकी आदत हो गई और वो हर रोज ऐसा करने लगा। कुछ दिन बाद परीक्षा का परिणाम घोषित हुआ जिसमें श्याम और उसके दोस्त फेल हो गए। वही उसके भाई ने प्रथम स्थान हासिल किया। श्याम अपने घर मार्कशीट लेकर गया, उसके माता-पिता ने जब उसके अंक देखें तो बहुत उदास हुए कि हमारा एक बेटा पढ़ने में इतना अच्छा है और दूसरा उतना नालायक है।

श्याम को महसूस हुआ कि मैंने अपने माता-पिता का दिल दुखाया है, इसके बाद उसने उन्हे भरोसा दिलाया कि में अगली परीक्षा में आपको सफल होकर दिखाऊँगा।श्याम ने अपने उन दोस्तों का साथ छोड़ दिया जिन्होंने उसकी सफलता में उसका मार्ग रोका था। और वह अपनी पढ़ाई में ध्यान देने लगा ।नतीजा यह हुआ कि साल भर की मेहनत से वह परीक्षा में सफल ही नहीं बल्कि उसने विद्यालय में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। उसके माता-पिता को बहुत खुशी हुई है और उन्होने श्याम को गले से लगाया और शाबाशी दी।

स्वामी विवेकानंद :युवाओं के आदर्श

वैष्णवी मोगरे

बीए चतुर्थ सेमेस्टर

1893 में शिकागो में स्वामी विवेकानन्द की तस्वीर जिसमें हस्तलिखित शब्द थे एक अनंत शुध्द और पवित्र विचारों से परे, गुणों से परे, मैं तुम्हें नमन करता हूँ।"

स्वामी विवेकानन्द (1863-1902) को संयुक्त राज्य अमेरिका में 1893 विश्व धर्म संसद में अपने अभूतपूर्व भाषण के लिए जाना जाता है, जिसमें उन्होंने अमेरिका में हिन्दु धर्म का परिचय दिया और धार्मिक सहिष्णुता और कट्टरता को समाप्त करने का आवाहन किया। नरेंद्रनाथ दत्त 19वीं सदी के रहस्यवादी रामकृष्ण परमहंस के मुख्य शिष्य और रामकृष्ण मिशन के संस्थापक थे। स्वामी विवेकानन्द को पश्चिम में वेदांत और योग की शुरुआत में एक प्रमुख व्यक्ति माना जाता है और उन्हें हिन्दू धर्म की छवि को विश्व धर्म के रूप में स्थापित करने का श्रेय दिया जाता है।

12 जनवरी को स्वामी विवेकानन्द की जयंती मनाई जाती है। इसे अंतराष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। गरीबी, अशिक्षा, महिला उत्पीड़न जैसी समस्याएं स्वामी विवेकानन्द के युग में भी थीं और आज भी हैं। उस समय विवेकानन्द ने इस समस्याओं पर विचार किया और इनका समाधान भी दिया लेकिन आज के नेताओं के पास इन समस्याओं पर ध्यान देने का समय ही नहीं है।स्वामी विवेकानन्द के आदर्श आज भी अच्छे है।वे हमें आने वाले वर्षों में प्रेरणा देते रहेंगे।विवेकानन्द ने देश की ज्वलंत समस्याओं का उत्तर दिया।

स्वामी विवेकानन्द भारत की गरीबी से परिचित थे। हमारे देश में लगभग 7 7 फीसदी आबादी प्रतिदिन 20 रुपये में गुजारा करने पर आमादा है। विवेकानन्द ने बताया कि गरीबों के प्रति हमारा दृष्टिकोण क्या होना चाहिए और हमें उन्हें भगवान के रूप में देखना चाहिए क्योंकि वे परमेश्वर की संतान हैं। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि गरीबों की सेवा ईश्वर की पूजा समझो। उन्होंने कहा कि जब करोड़ों गरीब लोग भूख से मर रहे हैं तो मैं हर उस आदमी को गद्दार कहूँगा जिसने गरीबों की कीमत पर शिक्षा हासिल कि लेकिन उनकी परवाह नहीं की। हमें गरीबों के प्रति अपना नजरिया बदलना चाहिए, तब गरीबों के लिए बनाई गई नीतियां उनके हित में होंगी। हमारे देश में बहुत सारे संसाधन है और धन का एक बड़ा हिस्सा पहले से ही समृद्ध लोगों के हाथों में है और गरीबों के पास जो थोड़ा पैसा है वह काला धन माना जाता है।

पेड़ लगाओ प्रकृति बचाओ

वंशिका बैरागी
बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर

खुश था मैं अपने जीवन में फिर एक दिन इंसान आया

इसान को अपनी ओर आते देख मेरा मन बहुत घबराया

इंसान के हाथ में कुल्हाड़ी देख मुझे अपना अंत समय नजर आया

मैं इसान के सामने बहुत गिड़गिड़ाया पर इसान ने मुझे काट गिराया

मैं भागना चाहता था पर पैर नहीं थे मेरे पास

मैं उड़ना चाहता था पर पंख नहीं थे मेरे पास

किसने हक दिया तुझे ए इंसान जो हमें ऐसे काट गिराया

अगर तू ही बन जाएगा हमारा दुश्मन तो हमे कौन बढ़ाएगा ।।

समय का महत्व

आयुषी झा
बीए चतुर्थ सेमेस्टर

समय का मानव जीवन में महत्व होता है। मानव जीवन नदी की धारा के समान होता है। जिस तरह नदी की धारा ऊँची नीची भूमि को पार करती हुई लगातार आगे बढ़ती है, उसी प्रकार जीवन की धारा सुख-दुःख रूपी जीवन के अनेक संघर्षो को सहते - भोगते आगे बढ़ती रहती है। जीवन का उद्देश्य लगातार आगे बढ़ना होता है, इसी में सुख है आनंद है। जो समय को पकड़कर इसके साथ- साथ भागते हुए चल सकते हैं उन्होंने ही समय को जाना है। जिस किसी ने भी समय के महत्व को पहचाना है और उसका सदुपयोग किया है वह उन्नति की सीढ़ी पर चढ़ता चला गया है। लेकिन जिसने इसका तिरस्कार किया है समय ने उसको बर्बाद कर दिया है।

समय अमाप है। समय का कोई आरंभ और अंत नहीं है। समय अभिभाज्य औरअतुलनीय है। समय को सेकंड, मिनट, घंटे, दिन, सप्ताह, महीने, साल, दशक और सदियों में बांटा गया है। समय हमेशा आगे की ओर बढ़ता जाता रहता है, वो कभी पीछे मुड़कर नहीं देखता। समय से दुनिया का कोई भी व्यक्ति जीत नहीं सकता। समय की कोई सीमा निर्धारित नहीं कर सकता है। समय एक बहुत शक्तिशाली चीज होती है जिसके साथ वस्तुएं पैदा होती है, बढ़ती है, घटती है। समय किसी का भी दास नहीं होवा । समय किसी पर निर्भर नहीं करता वह अपने गति से चलता है।भगवान ने प्रत्येक मनुष्य को एक निश्चित उददेश्य और निश्चित समय के साथ पृथ्वी पर भेजा है। प्रत्येक मनुष्य के जीवन में नपा- तुला समय है। जब हम ज्यादातर समय को व्याख्या बेकार व्यतीत है तब हमे होश नहीं रहता। समय के महत्त्व पर एक कहावत है-" अब पछताए होत क्या जब चिहिया चुग गई खेत। इसी वजह से हर विवेकशील व्यक्ति समय का महत्व समझता है।

हमारा जीवन समय से जुड़ा है। भगवान ने हमें जितना भी समय दिया है उसमे एक पल वृद्धि होना असंभव है। जिस राष्ट्र के व्यक्ति समय के महत्व को समझ जाते है, वही राष्ट्र समृद्ध हो सकता है। समय के सदुपयोग से ही मनुष्य निर्धन, अमीर, निर्बल सबल मूर्ख और विद्वान बन सकता है। समय एक अमूल्य धन भी होता है। हमारा कर्तव्य है कि हमें दिन में जो मी काम

करना है इसो सुबह ही निश्चित कर लेना चाहिए। दिन में ही उसे काम को करके समाप्त कर लेना चाहिए।जो व्यक्ति समय का सम्मान करता है समय भी उसका सम्मान करता है। गांधी जी ने बहुत ही सावधानी और बुद्धिमानी से समय का सदुपयोग किया था। इसी वजह से वे महान पुरुष बने थे। जो व्यक्ति समय का सदुपयोग करता है वह सभी सुखों को प्राप्त कर पाता है। माता लक्ष्मी भी उसकी सखी बन सकती है।छात्र की जीवन रूपी भवन की नींव भी इसी समय पर बनती है। जिस तरह से एक बहुत बड़ी पुस्तक को लिखने के लिए एक- एक शब्द लिखना पड़ता है इसी प्रकार विद्यार्थियों को एक-एक सेकंड का उपयोग करके इस समय को सार्थक बनाना चाहिए।

.....

हिन्दू है हम

धर्म निहारिका जाटव
बीए चतुर्थ सेमेस्टर

हिन्दू है हम हिन्दू पर गर्व है

22 जनवरी को श्रीराम जी का पर्व है।

हिंदू हैं हम हिन्दू पर गर्व है।

दिन महीने साल दशक सब बीत गये

इतिहास गवाह है हारने वाले हारे,

जीतने वाले जीत गये

ये दिन ये पल जैसे मानो धरती में स्वर्ग है

हिन्दू है हम, हिन्दू पर गर्व है।

मनाओं खुशिया, खूब झूमो नाचो गाओ

मगर याद रहे जब दिक्कत आये,

सब साथ मिलकर आओं

दिखा दो दुनिया को, कि हमारा एक अलग वर्ग है

हिन्दू है हम हिंदू पर गर्व है

22 जनवरी को श्रीरामजी है का पर्व है।

पर्यावरण

साक्षी बावरिया
बीए चतुर्थ सेमेस्टर

बदले हम तस्वीर जहाँ की सुंदर सा एक दृश्य बनाएं

संदेश यह तब तक फैलाएं आओ पयर्यावरण बचाए।

फैल रहा है खूब प्रदूषण काट रहा मानव जंगल

वन हवा हो रही है जहरीली कमजोर पड़ रहा है सबका तन मन

समय आ गया है कि मिलकर हम सब कोई कदम उठाए

संदेश यह हम सब तक फैलाएं आओ पर्यावरण बचाएं

प्रयोग करें गाड़ी का कम चलने पर पैदल जोर दें

थैले रखें हम कपड़े के प्लास्टिक को रखना छोड़ दें

अहंकार को छोड़ के अब तो यह हम सबको समझाएं

संदेश यह सब तक फैलाएं आओ पर्यावरण बचाएं

नया सबेरा

लक्ष्मी
बीए द्वितीय सेमेस्टर

आज दरवाजे पर दस्तक हुआ है
फिर वहीं गर्म हवा आई है,
दरवाजे पर दस्तक देने .....
बोली सूरज निकल आया
चलो बाहर दुनिया का दीदार करने..
क्यों उदास हो देखो नया सवेरा हुआ है
दरवाजा खोलो और दुनिया की
खूबसूरती को देखो
झिलमिला रही है सूर्य की
रोशनी भी और गर्म हवाएं भी
नए सपने देखो पुरा करो उसको
जीवन की नौका को एक बार
खुद से पानी में बहा दो तुम....
दरवाज़े पर मौका आया
उसको ना जाने देना है
सब पा लेना, सब पा लेना है....

बचपन के वो दिन

प्रियंका
बीए द्वितीय सेमेस्टर

बचपन के वे दिन भी क्या दिन थे

दोस्तों के साथ वो मस्तियां

वो नोक झोंक और फिर मनाना

एक साथ बैठकर पढ़ना

टिफिन बॉक्स खुलते ही खत्म हो जाना

स्कूल से दोस्तों के साथ

पैदल घर आना गाते गुनगुनाते

और मस्ती में अब कहां देखने को मिलता है

दोस्तों की आवाज सुनते ही सरपट भागना

खेलते तो ऐसे थे मानो

सालो बाद खेल रहे हैं

ना खाने की फिक, ना. घर जाने की

और मम्मी के आते ही

बिना चप्पल भागना

ना किसी चीज की चिंता,

ना फिक्र बस अपने आप में

मस्त हुआ करते थे

रेल बनके पूरा गांव घूमना थे

तो हम नन्हें मुन्ने बच्चे लेकिन

हमारे आते ही लोग कहते थे

लो शैतानो की टोली आ गई

बीत गए वो दिन बचपन के

जब हम बच्चे हुआ करते थे

काश वो दिन फिर से जी पाते

हम रोक पाते वो बचपन के

दिनों को जो चले गए....

धर्म एकता का माध्यम है

रोहित कुमार प्रियदर्शी
बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर

पूरी दुनिया में सभ्यता के विकास के साथ ही विभिन्न धर्मों की स्थापना हुई और हरेक धर्म मनुष्य जीवन को नैतिकता, ईमानदारी का साथ देते हुए जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं।विश्व के लगभग सभी धर्म हमें दूसरों की भलाई करना एवं संतुलित जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। साथ ही हर धर्म की पूजा पद्धति भी अलग-अलग होती है लेकिन वह सभी अलग-अलग तरीकों से लोगों को एक साथ जुड़े रहने की प्रेरणा देते हैं। अर्थात सभी धर्म के मूल में कौमी एकता को प्रोत्साहित करने की भावना का समावेश होता है।

दूसरे शब्दों में अगर कहा जाए तो हर धर्म की स्थापना के पीछे एकमात्र उद्देश्य पारस्परिक एकता को बढ़ाना है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। हर धर्म के लोगों को एक साथ मिलकर समाज को बेहतरी के रास्ते पर आगे बढ़ाने की प्रेरणा देते हैं। मूलतः धर्म का प्रादुर्भाव एकता की भावना को बढ़ाने के लिए ही हुआ है। लोगों के बीच अगर एकता एवं सामंजस्य न हो तो धर्म की परिकल्पना ही बेमानी हो जाती है। विश्व के चार प्रमुख धर्म हिंदू, बौद्ध, जैन तथा सिख की जन्मस्थली के रूप में भारत को जाना जाता है।

इन सभी धर्म की स्थापना का एकमात्र उद्देश्य एक प्रकार की जीवन शैली, वैचारिक सामंजस्य, जीवन पद्धति का विकास एवं सामूहिक एकता के बल पर विकासपूर्ण समाज की स्थापना करना था। जहां हिंदू धर्म सर्वधर्म समभाव एवं वसुदेव वसुदेव कुटुंबकम की भावना से प्रेरित है वही इस्लाम मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना का संदेश देता है। भारत विश्व में धार्मिक विविधता के बावजूद कौमी एकता का अनूठा उदाहरण पेश करता है।

भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है और यहां की कुल जनसंख्या विभिन्न धर्मो के लोगों से मिलकर बनी है इसके बावजूद यहां राष्ट्र धर्म ही सर्वोपरि है और भारत के संविधान में सभी धर्म के लोगों को अपने-अपने धर्म से संबंधित पद्धतियों के पालन की स्वतंत्रता है। और संकट की स्थिति में राष्ट्र में सभी धर्म के लोग यहां एकजुट हो जाते हैं। विश्व में हिंदू मुस्लिम सिख इसाई एवं

पारसी आदि प्रमुख धर्म है और इन सभी धर्म का विकास लोगों को एकजुट रखने के लिए ही हुआ है।

यह भी सर्वविदित है कि एक धर्म के लोगों के वर्चस्व से जनमत भी तैयार होता है। विश्व के धर्म प्रधान कुछ देशों में तो धार्मिक कट्टरवाद अपने चरम पर पहुंच चुका है। उनको भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र से बहुत कुछ सीखने की आवश्यकता है। उन्हें भारत से इस बात की प्रेरणा लेनी चाहिए कि किस तरह यहां विभिन्न धर्मो के लोग राष्ट्र धर्म की भावना के साथ एकता के सूत्र में बंध कर एक साथ प्रेम पूर्वक रहते हैं और पूरे विश्व को कौमी एकता का संदेश देते हैं।

.....

आत्मविश्वास

ईशा जायसवाल
बीए द्वितीय सेमेस्टर

आत्मविश्वास मानव चरित्र का वह गुण है जिसके द्वारा उसका व्यक्तित्व निखरता है, उसकी कार्य क्षमता बढ़ती है, वह प्रत्येक कार्य को कुशलता पूर्वक करता है। आत्मविश्वास मनुष्य का वह बल है जिससे मनुष्य की सोचने समझने विचार करने की क्षमता बढ़ती है। आत्मविश्वास व्यक्ति को आंतरिक बल प्रदान करता है जो उसे उसके लक्ष्य को प्राप्त करने में पूर्णतः सहायक होता है। बिना आत्मविश्वास के किसी लक्ष्य को पाना लगभग ना मुमकिन ही है परंतु अत्याधिक आत्मविश्वास करना व्यक्ति के लिए हानिकारक या व्यर्थ साबित हो सकता है।

यदि आत्मविश्वास है तो व्यक्ति किसी भी दुख या हानि को सरलता से पार कर जाता है। आत्मविश्वास के बल पर मनुष्य कठोर से कठोर धरती पर हल चला लेता है। एक आत्मविश्वासी व्यक्ति कहता है कि मुझे कठिन कार्य दीजिए मैं उसे करूंगा। यदि हम एक विद्यार्थी के आत्मविश्वास की बात करें तो आज के विद्यार्थियों में आत्मविश्वास ना के बराबर है। विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने विद्यालय, महाविद्यालय जाते हैं और ज्ञान प्राप्त करते हैं परंतु जिसकी सबसे अधिक आवश्यकता है एक विद्यार्थी को तो वह है आत्मविश्वास। जो हर विद्यार्थी के अंदर नहीं है।

विद्यार्थी ही देश का भविष्य है। विद्यार्थी को आत्मविश्वास की अत्यंत आवश्यकता है जिससे देश का भविष्य उज्जवल हो। आत्मविश्वास से व्यक्ति में दोगुना बल आ जाता है जिससे वह अपनी मंजिल को पाने के लिए दोगुनी मेहनत कर सकता है और मंजिल प्राप्त करके एकदम उसके करीब आ जाता है। और वह लगातार उन्नति के शिखर तक पहुंच जाता है। परिश्रम का दूसरा नाम सफलता है और जो मनुष्य केवल आत्मविश्वास के बल पर ही परिश्रम करके सफलता प्राप्त कर सकता है। आत्मविश्वास से मनुष्य शारीरिक रूप से अक्षम होने पर भी ऊंची से ऊंची चोटी चढ़ सकता है।

जाति व्यवस्था

विक्रांत सिंह धुर्वे
बीए चतुर्थ सेमेस्टर

भारत प्राचीन काल से ही जाति प्रथा की व्यवस्था में फंसा हुआ है। हालांकि इस प्रणाली के उद्गम की सटीक जानकारी उपलब्ध नहीं है। और इस वजह से विभिन्न सिद्धांत जो अलग-अलग कथाओं पर आधारित है प्रचलन में है। वर्ण व्यवस्था के अनुसार मोटे तौर पर लोगों को अलग-अलग श्रेणियां में विभाजित किया गया यहां इन श्रेणियां के अंतर्गत आने वाले लोगों के बारे में बताया जा रहा है। इन श्रेणियां में से प्रत्येक के अंतर्गत आने वाले लोग निम्न प्रकार से हैं -

ब्राह्मण -पुजारी, शिक्षक एवं विद्वान के रूप में, क्षत्रिय - प्रशासक एवं योद्धा के रूप में, वैश्य - किसान एवं व्यापारी के रूप में तथा शूद्र -मजदूर और अछूत के रूप में। वर्ण व्यवस्था बाद में जाति व्यवस्था में परिवर्तित हो गई और समाज में जन्म के आधार पर निर्धारित होने वाली 3000 जातियां एवं समुदाय थी जिन्हें आगे 25000 उपजातियां में विभाजित किया गया था। एक सिद्धांत के अनुसार देश में वर्ण व्यवस्था की शुरुआत लगभग 1500 ईसा पूर्व में आर्यो के आगमन की पश्चात हुई। यह कहा जाता है कि आर्यों ने इस प्रणाली की शुरुआत लोगों पर नियंत्रण स्थापित करने एवं समाज प्रक्रिया को व्यवस्थित ढंग से चलने के लिए की थी। उन्होंने लोगों के विभिन्न समूहों के लिए अलग-अलग भूमिकाएं तय की। हिंदू धर्म शास्त्रों के अनुसार इस प्रणाली की शुरूआत भगवान ब्रह्मा जी, जिन्हें ब्रह्मांड के रचयिता के रूप में जाना जाता है, के साथ शुरू हुई।

जैसे ही वर्ण व्यवस्था जाति प्रथा में बदल गई जातिगत आधार पर भेदभाव की शुरुआत हो गई। उच्च जाति के लोग महान माने जाते थे और उनके साथ सम्मान से पेश आया जाता था।और उन्हें कई विशेषाधिकार भी प्राप्त थे। वहीं दूसरी तरफ निम्न वर्ग के लोगों को कम-कम पर अपमानित किया गया और कई चीजों से वंचित किया गया। अंतर्जातीय विवाह तो सख्त मना ही था। भारत के शहरी इलाकों में जाति व्यवस्था से संबंधित सच में आज बेहद कमी आई है। हालांकि निम्न वर्ग के लोगों को आज भी सम्मान ना के बराबर ही मिल पा रहा है जबकि सरकार द्वारा उन्हें कई लाभ प्रदान किया जा रहे हैं।

जाति देश में आरक्षण का कारण बन गई है। निम्न वर्ग से संबंधित लोगों के लिए शिक्षा एवं सरकारी नौकरी के क्षेत्र में एक आरक्षित कोटा भी प्रदान किया जाता है। अंग्रेजों के जाने के बाद भारतीय संविधान ने जाति व्यवस्था के आधार पर भेदभाव पर प्रतिबंध लगा दिया। उसके बाद अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्गों के लिए कोटा प्रणाली की शुरुआत की गई। भीमराव अंबेडकर जिन्होंने भारत का संविधान लिखा वह खुद भी एक दलित थे। और दलित एवं समाज के निचले सोपनो पर अन्य समुदाय के हितों की रक्षा के लिए सामाजिक न्याय की अवधारणा को भारतीय इतिहास में एक बड़ा कदम माना गया था। हालांकि अब विभिन्न राजनीतिक दलों द्वारा राजनीतिक कार्य से इसका दुरुपयोग भी किया जा रहा है।

.....

चंद्रयान 3

आलिया फातिमा सिद्दीकी
बीए द्वितीय सेमेस्टर

चंद्रयान 3 भारत का तीसरा चन्द्र मिशन है। यह 1 जुलाई 2003 को सतीश धवन अंतरिक केन्द्र श्री हरिकोटा से लॉन्च किया गया था। चन्द्रयान 3 का लक्ष्य चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र में एक लैंडर और एक रोवर को उतारना है। लेंडर को चन्द्रमा के सतह पर एक सुरक्षित जगह पर उतारना है और रोवर को सतह पर 100 मीटर तक चलने और चन्द्रमा के बारे में जानकारी एकत्र करने का काम करना है।चंद्रयान में कई उपकरण लगे है जो चंद्रमा के बारे में जानकारी एकत्र करेंगे। इनमें से कुछ उपकरण है:

विक्रम लेंडर:विक्रम लेंडर चन्दमा के सतह पर एक सुरक्षित जगह पर उतारने के लिए जिम्मेदार है। यह एक छोटा सा रोवर की भी ले जाएगा जो चंद्रमा के बारे में जानकारी एकत्र करेगा।

प्रज्ञान रोवर - प्रज्ञान रोवर चन्द्रमा के सतह पर 200 मीटर तक चलने और चन्द्रमा के बारे में जानकारी एकत्र करने के लिए जिम्मेदार है। यह चन्द्रमा की चट्टानों और धूल का नमूना लेगा और यह चद्रमा के वातावरण का अध्ययन करेगा।

चन्द्रमान ३ ऑर्बिटर:चन्द्रयान 3 ओबिटर चंद्रमा के चारो ओर चक्कर लगाएगा और चन्द्रमा की सतह और वातावरण का अध्ययन करेगा। यह चन्द्रमा के बारे में तस्वीरे और वीडियो भी लेगा। चंद्रयान 3 एक महत्वपूर्ण मिशन है जो भारत को अंतरिक्ष अन्वेषण में एक कदम आगे ले जाएगा।

यह मिशन चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र की अध्ययन करेगा जो अभी तक किसी भी देश द्वारा नहीं किया गया। नई जानकारी मिलेगी और यह हमें भविष्य में चंद्रमा पर मानव मिशनों को भेजने में मदद करेगा।चन्द्रयान 3 के लांच होने के बाद भारत अब दुनिया के उन कुछ देशों मे में शामिल हो गया, जिन्होंने चंद्रमा पर लैंडर और रोवर को उतारने में सफलता हासिल की है। चन्द्रमान 3 भारत के लिए एक बड़ी उपलब्धि है और यह देश के अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

बढ़े चलो

विशाल सिंह धुर्वे
बीए चतुर्थ सेमेस्टर

फूल बिछे हो या कांटे हो
राह ना अपनी छोड़ो तुम
चाहे जो विपदाएं आए
मुख को जरा ना मोड़ो तुम
साथ रहे या रहे ना साथी
हिम्मत मगर न छोड़ो तुम
नहीं कृपा की भिक्षा मांगो
कर ना दीन बन जोड़ो तुम
बस ईश्वर पर रखो भरोसा
पाठ प्रेम का पढ़े चलो
जब तक जान बनी हो तन में
तब तक आगे बढ़े चलो

कृष्ण कन्हैया

आर्या अग्रवाल
बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर

कृष्ण कन्हैया ओ गोपाल,
माखनचोर जगत के लाल,
ब्रजवासियों के मन को खूब हो भाते
बाँसुरी की धुन पर सबको नचाते ।
पूतना के सर्वनाशी तुम मीरा के गिरधारी।
गोवर्धन उठाने वाले, तुम नन्हे मुकुटधारी।।
मुख में ब्रह्माण्ड बसाने वाले,
तुम सर्वशक्तिशाली हो।
कंस का अंत करने वाले
तुम महाबलशाली हो।
फिर भी हो तुम नटखट
प्यारे यशोदा के तुम खूब दुलारे
तुमपर सब छिड़कते ज्ञान,
तुम्हारी जान राधा के नाम। प्रे
म का यूँ रंग लगाया,
कृष्ण से पहले राधा का नाम आया।
अमर प्रेम की तुम्हारी गाथा,
तुम संग हर मंदिर में राधा।
तुम्हारे भजन हर रोज हैं गाते,
सारे दुखों को दूर भगाते ।

भगवान विष्णु नें क्यों लिया श्रीराम अवतार?

आर्यन दाहिया
बीए द्वितीय सेमेस्टर

हिंदू मान्यता केअनुसार विष्णु जी ने श्रीराम अवतार 'अन्यायी एवं दुष्ट राक्षस राजा रावण को मारने के लिए लिया था। श्री राम अवतार में विष्णु जी नें आदर्श पुत्र, भाई, पति और मित्र के गुण को विश्व के सामने रखा। श्री राम जी ने पिता के कहने पर 14 वर्ष का वनवास काटा तथा अपनी मित्रता का संदेश देते हुए बाली की हत्या सुग्रीव का राज-पाठ उसे वापस दिलाया ।

भगवान श्री राम को मर्यादा पुरुषोत्तम भी कहा जाता है। श्री राम ने मर्यादा का पालन करने के लिए राज्य, मित्र, माता-पिता, यहाँ तक की पत्नी का भी साथ छोड़ा। इनका परिवार आदर्श भारतीय परिवार का प्रतिनिधित्व करता है। राम रघुकुल में अवतरित थे। जिसकी परंपरा प्राण जाए पर वचन न जाए थी। पिता दशरथ ने सौतेली माता कैकेयी को वचन दिया था, उसकी २ इच्छा (वर) पूर्ण करने का ।

कैकेयी ने इन वर रूप में आपने पुत्र भरत को अयोध्या का राजा और श्री राम जी के लिए 14 वर्ष का बनवास माँगा। पिता के वचन की रक्षा के लिए श्री राम ने खुशी से 14 वर्ष का वनवास स्वीकार किया। पत्नी सीता ने आदर्शपत्नी का उदाहरण पेश करते हुए पति के साथ जाना पंसद किया।

भाई लक्ष्मण ने भी भाई का साथ दिया। भरत ने न्याय के लिए माता का आदेश ठुकराया और राम का साथ दिया और बड़े भाई श्री राम के पास जाकर उनकी चरणपादुका (चप्पल) ले आए । इसे ही राज गद्दी पर रख कर राजकाज किया। श्री राम की पत्नी सीता को रावण हरण (चुरा) कर ले गया श्री राम ने उस समय की एक जनजाति वानर के लोगो की मदद से सीता को बचाया । समुद्र में पुल बना कर रावण के साथ युद्ध किया। उसे मार कर सीता को वापस लाये। बहुत अच्छा शासन किया इसलिए आज भी अच्छे शासन की उपमा देते हैं। हिन्दू धर्म के को त्यौहार जैसे दशहरा और दीपावली, श्री राम की जीवन कथा से जुड़े हुए हैं। रामनवमी का पावन पर्व श्री राम जी के जन्म उत्सव के रूप में मनाया जाता है।

भगवान श्रीराम जी की सुंदर कथा

श्री राम (रामचन्द्र), प्राचीन भारत में अवतरित, भगवान है। हिंदु धर्म में श्री राम श्री विष्णु के 10 अवतारों में में सातवें अवतार है। "रामायण नामक ग्रंथ में भगवान श्री राम जी में विषय में पूर्ण जानकारी दी गई है। भगवान श्री राम को मर्यादा पुरुषोत्तम पाहा जाता है। बहुत रखास अधिक तौर पूजनीय है। उत्तर भारत में श्रीराम।

भगवान श्री राम का अवतार कब हुआ।भगवान श्री राम ईसा पूर्व 5114 में आवतरित हुए थे) अगर आज से हिसाब लगाया 27137 थे। दिव्य साल पहले जायें तों भगवान 511472023 श्रीराम आवतरित यह शोध महार्षि वाल्मीकि की रामायण में उल्लेखित उनके जन्म के गया है, भगवान श्री आधार पर किया राम पर यह शोध वैज्ञानिम सोच "आई" में मिया है। इस शीध में मुख्य भूमिक अशीम भटनागर, कुलभूषण मिश्र और सरोज बाला नें निभाई है। as

इमने अनुसार 10 जनवरी 51.14 को भगवान श्रीराम जी का जन्म हुआ था। हांलाकि कुछ शोधकर्ता मानते हैं कि भगवान श्रीराम का अवतार 7330 ईसा पूर्व हुआ था।

भगवान श्री राम

भगवान श्रीराम जी का जन्म अयोध्या में राजा में घर में हुआ था। उनकी माता का नाम कौशल्या और पिता का ऊ नाम दशरथ था। भगवान श्रीराम जी कें भरत, शत्रुघ्न के गुरु का नाम और लक्ष्मण । भगवान वशिष्ठ था। उनका सीता जी में साथ हुआ था। माता भगवान सीता जी की जोड़ी को आदर्श जोड़ी माना है। पुत्र थे :- लव श्रीराम के, भगवान और कुश । सबसे बड़े भक्त तीन भार श्रीराम विवाह भाता माता श्रीराम और भी एम आज श्रीराम जी के श्रीहनुमान, भगवान माने जाते हैं।

गुरुकुल में शिक्षा

श्री राम और उनके तीनो भाई श्रीभरत, श्रीलक्ष्मण और श्रीशघुटन में गुरु वंशिष्ट में पाई । चारों भाई वेदों, उपनिषदों के गुरुकूल में शिक्षा बहुत बड़े ज्ञाता बन गरी । गुरुकुल में अच्छे मानतीय और सामाजिम गुणों का और नमे संचार हुया । अपने ज्ञान प्राप्ति की गुरुओं के प्रिय बन गये। से वें अच्छे गुणों सभी जन के प्रिय हैं।

.....

हमारे प्यारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

एकता अम्लानी
एम-कॉम द्वितीय सेमेस्टर

वर्तमान में हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी हैं । उनका पूरा नाम नरेंद्र दामोदरदास मोदी है । उनका जन्म 17 सितंबर 1950 को हुआ था । वह एक मध्यम वर्गीय शाकाहारी परिवार से हैं। भारत पाकिस्तान के बीच द्वितीय युद्ध के दौरान किशोरावस्था में उन्होंने स्वेच्छा से रेलवे स्टेशनों पर सफर कर रहे सैनिकों की सेवा की । युवावस्था में वह छात्र संगठन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में शामिल हुए उन्होंने भ्रष्टाचार विरोधी नवनिर्माण आंदोलन में हिस्सा लिया । एक पूर्वकालिक आयोजन के रूप में कार्य करने के पश्चात उन्हें भारतीय जनता पार्टी में संगठन का प्रतिनिधि मनोनीत किया गया। किशोरावस्था में अपने भाई के साथ एक चाय की दुकान चला चुके नरेंद्र मोदी ने अपने स्कूली शिक्षा बड़नगर में पूरी की । उन्होंने आरएसएस के प्रचारक रहते हुए 1980 में गुजरात विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर परीक्षा दी और मास्टर डिग्री प्राप्त की । उनकी बचपन से ही वाद-विवाद और नाटक प्रतियोगिताओं में बहुत रुचि थी इसके अलावा उनकी रुचि राजनीतिक विषयों पर नई-नई परियोजनाएं प्रारंभ करने की भी थी। नरेंद्र मोदी जब विश्वविद्यालय के छात्र थे तभी से वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा में नियमित जाने लगे थे। उन्होंने गुजरात में शंकर सिंह बघेल का जनाधार मजबूत बनाने में राजनीति प्रारंभ की। मोदी ने सन 1995 के विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी की जीत में भी एक अहम भूमिका निभाई थी। उन्होंने आडवाणी के साथ अयोध्या से सोमनाथ तक की रथ यात्रा में भी सहयोग दिया। सन 1995 में राष्ट्रीय मंत्री के नाते उन्हें पांच प्रमुख राज्यों में पार्टी संगठन का काम दिया गया। इसके बाद 1998 में उन्हें राष्ट्रीय महामंत्री का उत्तरदायित्व दिया गया। वह अक्टूबर 2001 तक काम करते रहे। फिर वह अक्टूबर 2001 को गुजरात के मुख्यमंत्री बन गए। मुख्यमंत्री बनने के बाद उन्होंने गुजरात के लिए अनेक कार्य किया हुए। एक ऐसे व्यक्ति हैं जो भारतीय संस्कृति को बहुत मानते हैं इसलिए वह हमेशा कुर्ता पजामा व सूट पहनते हैं। वह हमेशा गुजराती वह राष्ट्रभाषा हिंदी में ही संवाद करते हैं। उन्होंने गुजरात के विकास हेतु अनेक कार्य किए हैं। उन्होंने गुजरात में 5 लाख लोगों को रोजगार से जोड़ने के अलावा उच्चतर शिक्षा की गुणवत्ता, आवास, शहरी विकास, आर्थिक विकास आदि कार्यों को भी सफलतापूर्वक पूर्ण किया है। गुजरात के मुख्यमंत्री मोदी की बहुत प्रशंसा हुई । तो उन्हें लोकसभा

चुनाव 2014 में सांसद प्रत्याशी के रूप में वाराणसी वह वडोदरा से चुनाव लड़ाया गया। वह देश के प्रधानमंत्री के रूप में वह चुने गए प्रधानमंत्री बनने के बाद मोदी ने देश व मातृभूमि के प्रति भी अपने आप को समर्पित किया। उन्होंने अनेक कार्यों को प्रारंभ किया जैसे प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना, प्रधानमंत्री शहरी विकास योजना आदि। उन्होंने कई कार्यक्रम जैसे मन की बात, परीक्षा पर चर्चा आदि कार्यक्रम भी प्रारंभ किया। उन्होंने अटल टनल मेट्रो, रेल बुलेट ट्रेन, सड़के, कृषि, कानून धारा 370, राम मंदिर निर्माण व उद्घाटन आदि कई कार्य देश के लोगों के हित के लिए किए हैं इसलिए उन्हें देश के प्यारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कहा जाता है।

हिन्दी साहित्य सभा 2023-2024

प्रेमचंद जयंती

तुलसीदास जयंती

हिन्दी दिवस

विश्व हिन्दी दिवस

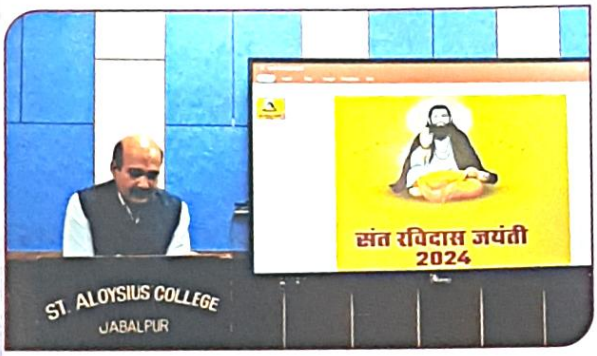

संत रविदास जयंती

शैक्षणिक भ्रमण – नंदकेश्वर धाम बरगी